Toppersnotes®
Unleash the topper in you

C–TET

केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE)

भाग - 1

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	बाल विकास का अधिगम या सीखने से संबंध	1
2	बाल विकास के सिद्धांत	4
3	वंशानुक्रम एव वातावरण का प्रभाव	6
4	समाजीकरण प्रक्रियाएँ	12
5	पियाजे, पावलव, कोहलर और थार्नडाइक : रचना एवं आलोचनात्मक स्वरूप	17
6	बालकेंद्रित एवं प्रगतिशील शिक्षण की अवधारणा	32
7	बुद्धि (Intelligence)	36
8	भाषा एवं विचार	46
9	सामाजिक निर्माण के रूप मे लिंग और इसकी भूमिका	52
10	व्यक्तिगत विभिन्नताएँ	56
11	अधिगम कठिनाइयों, क्षति आदि से ग्रस्त बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान	63
12	प्रतिभावान, सृजनात्मक, विशेष क्षमता वाले अधिगमकर्ताओं की पहचान	74
13	अधिगमकर्ता का मूल्यांकन	81
14	सीखने का मूल्यांकन	86
15	समावेशित शिक्षा एवं विविध अधिगमकर्ताओं की समझ	97
16	सीखने की क्रिया : बच्चे कैसे सोचते और सीखते हैं	108
17	शिक्षण अधिगम की व्यूह रचनाएँ या रणनीतियां	111
18	शिक्षण और अधिगम की मूलभूत प्रक्रियाएँ	117
19	छात्र : समस्या समाधानकर्ता और वैज्ञानिक	129
20	अधिगम	134
21	अधिगम वक्र	143
22	संज्ञान एवं संवेग	146
23	अभिप्रेरणा	150

1 CHAPTER बाल विकास का अधिगम या सीखने से संबंध

अधिगम या सीखना

अधिगम या सीखना एक बहुत ही सामान्य और आम प्रचलित प्रक्रिया है। जन्म के तुरन्त बाद से ही व्यक्ति सीखना प्रारम्भ कर देता है और फिर जीवनपर्यन्त कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है।

सामान्य अर्थ में 'सीखना' व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है। परन्तु सभी तरह के व्यवहार में हुए परिवर्तन को सीखना या अधिगम नहीं कहा जा सकता ।

वुडवर्थ के अनुसार, "नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया, सीखने की प्रक्रिया है। "

गेट्स एवं अन्य के अनुसार, "अनुभव और प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाना ही अधिगम या सीखना है।"

क्रो एवं क्रो के अनुसार, "सीखना या अधिगम आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है।"

क्रॉनवेक के अनुसार, "सीखना या अधिगम अनुभव के परिणाम स्वरूप व्यवहार में परिवर्तन द्वारा व्यक्त होता है।"

मॉर्गन और गिलीलैण्ड के अनुसार, "अधिगम या सीखना, अनुभव के परिणाम स्वरूप प्राणी के व्यवहार में कुछ परिमार्जन है, जो कम से कम कुछ समय के लिए प्राणी द्वारा धारण किया जाता है।"

अधिगम या सीखने की विशेषताएँ

- **सीखना : सम्पूर्ण जीवन चलता हैं।**
- **सीखना : परिवर्तन का एक रूप हैं -** व्यक्ति स्वयं और दूसरे के अनुभव से सीख कर अपने व्यवहार, विचारों, इच्छाओं, भावनाओं आदि मे परिवर्तन करता हैं।
- **सीखना : सार्वभौमिक हैं -** सीखने का गुण सिफर मनुष्य मे नहीं पाया जाता हैं वरन संसार के समस्त जीवधारियों मे यह गुण विद्यमान होता हैं ।
- **सीखना : सक्रिय हैं -** सक्रिय रूप से सीखना वास्तविक रूप से सीखना हैं । बालक तभी कुछ सीख सकता हैं, जब वह स्वयं सीखने की प्रक्रिया मे भाग लेता हैं।
- **सीखना : उद्देश्यपूर्ण हैं -** सीखना, उद्देश्यपूर्ण होता हैं, उद्देश्य जितना अधिक प्रबल होगा, सीखने की प्रक्रिया उतनी ही तीव्र गति से होगी ।
- **सीखना : विवेकपूर्ण हैं -** मर्सेल का कथन हैं कि सीखना, यांत्रिक कार्य के बजाय विवेकपूर्ण कार्य कार्य हैं। किसी कार्य को शीघ्रता और सरलता से सीखा जा सकता हैं जिसमे बुद्धि या विवेक का प्रयोग किया जाता हैं।
- **सीखना : अनुभवों का संगठन है -** सीखना न तो नए अनुभव की प्राप्ति हैं और न पुराने अनुभवों का योग, वरन यह नए और पुराने अनुभवों का संगठन हैं।
- **सीखना : विकास हैं -** व्यक्ति अपनी दैनिक क्रियाओं और अनुभवों द्वारा कुछ न कुछ सीखता हैं, और इससे उस व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक विकास होता हैं।
- **सीखना : नया कार्य करना हैं -** वुडवर्थ के अनुसार - सीखना कोई नया कार्य करना हैं पर उसने उसमे एक शर्त लगा दी हैं उसका कहना हैं कि सीखना, नया कार्य करना तभी हैं, जबकि यह कार्य फिर किया जाए और दूसरे कार्यों मे प्रकट हो।
- **सीखना : अनुकूलन हैं -** सीखना, वातावरण से अनुकूलन करने के लिए आवश्यक हैं । सीखकर ही व्यक्ति, नई परिस्थितियों से अपना अनुकूलन कर सकता हैं । जब वह अपने व्यवहार को इनके अनुकूल बना लेता हैं, तभी वह कुछ सीख पाता हैं ।

अधिगम और विकास मे संबंध

अधिगम और विकास एक दूसरे के पुरक माने जाते हैं । अधिगम के बिना विकास असंभव हैं । दोनों कारकों मे अंतर संबंध का पाया जाना उसी प्रकार संभव हैं जैसे एक ही सिक्के के दो पहलू - अलग दिखते हुए भी एक ही सिक्के का हिस्सा हैं।। इनमे निम्नलिखित प्रकार के अंतर - संबंध पाए जाते हैं -

- **अधिगम मे विवरण :** प्रत्येक मानव प्राणी में अधिगम करने की एक सामान्य क्षमता होती है, लेकिन यह क्षमता हर व्यक्ति में समान नहीं होती। इस अधिगम क्षमता में अन्तर का कारण वैयक्तिक भिन्नताएँ होती हैं, जैसे व्यक्तित्व, रुचि, अभिवृत्ति, और व्यवहार के विभिन्न प्रतिमान। इसलिए, विभिन्न व्यक्तियों में अधिगम की प्रक्रिया और परिणाम में भिन्नता देखी जाती है। उदाहरण के लिए, एक छात्र गणित में जल्दी महारत हासिल कर सकता है, जबकि दूसरा छात्र भाषा में अधिक बेहतर होता है। यह अन्तर केवल परिपक्वता का फल नहीं है, बल्कि यह विकास और अधिगम दोनों का संयुक्त परिणाम होता है। कुछ योग्यताएँ जन्मजात होती हैं, अतः एक ही अधिगम के अवसर के बावजूद भी व्यक्तियों में अधिगम की मात्रा और गति अलग-अलग हो सकती है।
- **विकास की सीमाएँ :** विकास की एक निश्चित सीमा होती है, जिसके अनुसार ही प्रशिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया निर्धारित की जानी चाहिए। यदि अधिगम की व्यवस्था व्यक्ति के विकास स्तर को ध्यान में रखकर की जाए, तो अच्छे और सफल परिणाम की उम्मीद की जा सकती है, अन्यथा अधिगम अधूरा या कम प्रभावी रह जाएगा। कैटेल और उनके सहकर्मियों ने इस बात को स्पष्ट किया है कि किसी भी प्रकार का अधिगम और समायोजन प्राणी की अंतर्निहित गुणों द्वारा सीमित होता है। उदाहरण के लिए, एक शिशु को जटिल गणितीय संकल्पनाएँ नहीं सिखाई जा सकतीं क्योंकि उसकी मानसिक परिपक्वता अभी इस स्तर तक नहीं पहुँची होती। गेसेल ने भी कहा कि पर्यावरणीय कारक विकास में सहायता कर सकते हैं, उसे गति दे सकते हैं और सुधार कर सकते हैं, पर वे विकास की मूल श्रृंखला को उत्पन्न नहीं कर सकते। कारमाइकल एवं मैकग्रा के अनुसार परिपक्वता (Maturity) और अधिगम (Learning) दोनों विकास (Development) के पूरक हैं, अर्थात् विकास की प्रक्रिया इन्हीं दोनों कारकों के सम्मिलन से निर्धारित होती है। इसे सूत्र रूप में व्यक्त किया गया है: $D = f(M \times L)$, जहाँ D विकास, M परिपक्वता, और L अधिगम को दर्शाता है।
- **अधिगम की समय सारणी :** विकास और अधिगम के बीच एक महत्वपूर्ण अन्तर यह भी है कि विकास के आधार पर अधिगम के लिए **समय सारणी** निर्धारित की जा सकती है। इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति तभी अधिगम कर सकता है जब वह उस सीखने के लिए तैयार या तत्पर हो। अधिगम के लिए तत्परता का निर्धारण विकासात्मक तत्परता के माध्यम से किया जाता है, जो यह संकेत देती है कि कब अधिगम करना संभव और उचित होगा। यदि व्यक्ति अधिगम के लिए तैयार नहीं होता, तो उस समय अधिगम कराने का प्रयास सफल नहीं होता। हरलॉक ने भी कहा है, "व्यक्ति तब तक अधिगम नहीं कर सकता जब तक वह अधिगम के लिए तैयार न हो। विकासात्मक तत्परता यह निर्धारित करती है कि कब अधिगम होना चाहिए और कब नहीं।"

- **उद्दीपन की आवश्यकता :** मानव जीवन में जो आनुवंशिक विशेषताएँ निहित होती हैं, उनका विकास केवल तभी संभव होता है जब सामाजिक अधिगम और उचित उद्दीपन उपलब्ध हों। यदि बालक को अधिगम के पर्याप्त अवसर और उद्दीपन प्रदान न किए जाएँ, तो उसकी विकास की गति अवरुद्ध हो सकती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा उपयुक्त शिक्षा, सामाजिक संपर्क, और प्रोत्साहन से वंचित रह जाता है, तो उसकी मानसिक और शारीरिक क्षमताओं का विकास प्रभावित होगा। अधिगम की प्रक्रिया के दौरान उत्तेजनाएँ (stimulation) बालक को सीखने के लिए प्रेरित करती हैं और उन्हें अधिक सक्षम बनाती हैं। इस प्रकार उद्दीपन का अभाव आनुवंशिक क्षमताओं को पूरी तरह विकसित होने से रोक सकता है, जिससे बालक की समग्र विकास क्षमता सीमित हो जाती है।

2 CHAPTER बाल विकास के सिद्धांत

मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त (इरिक एरिक्सन)

- एरिक्सन ने अपनी पुस्तक "Childhood and Society" मे बालक का सामाजिक विकास महत्वपूर्ण माना है।
- एरिक्सन के सिद्धान्त में व्यक्तिगत, सांवेगिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास को समन्वित रूप से प्रस्तुत किया।
- इन्होनें व्यक्तित्व विकास में व्यक्ति की सामाजिक अनुभूतियों के महत्व पर बल दिया।
- व्यक्तित्व विकास में इड के स्थान पर अहम को अधिक महत्व दिया।
- मनोसामाजिक सिद्धान्त निम्न पाँच तथ्यों पर आधारित है
  - ✓ विकास की प्रत्येक अवस्था में एक मनोसामाजिक चुनौती होती है जिसे संकट कहा जाता है। जो इसका समाधान कर लेता है उसका विकास उतना ही अच्छा होता है।
  - ✓ विकास विभिन्न अवस्थाओं में होकर गुजरता है।
  - ✓ सभी की मौलिक आवश्यकताएँ एक समान होती है।
  - ✓ विकास की विभिन्न अवस्थाओं में व्यक्ति की प्रेरणा का अन्तर होता है।
  - ✓ व्यक्ति में आत्म और स्व का विकास इनके प्रति की गयी अनुक्रिया का परिणाम है।
- इस सिद्धान्त को जीवन अवधि विकास सिद्धान्त भी कहा जाता है।
- एरिक्सन ने अपने सिद्धान्त को **आठ अवस्थाओं** में बाँटा है।
  - ✓ विश्वास बनाम अविश्वास — जन्म से 1 वर्ष
  - ✓ स्वायत बनाम लज्जा एवं शक — 1 से 3 वर्ष
  - ✓ पहल बनाम दोषीत्व — 3 से 5 वर्ष
  - ✓ परिश्रम बनाम हीनता — 6 से 12 वर्ष
  - ✓ पहचान बनाम संशयिती — 12 से 18 वर्ष
  - ✓ घनिष्ठता बनाम अलगाव — 18 से 35 वर्ष
  - ✓ जननात्मक बनाम स्थिरता — 36 से 55 वर्ष
  - ✓ सम्पूर्णता बनाम निराशा — 55/60 वर्ष से अधिक
- **विश्वास बनाम अविश्वास (जन्म से 2 वर्ष) :** इस अवस्था में बालक को माता-पिता का प्यार व स्वयत्तता मिलती है तो विश्वास पैदा होता है और अगर उसको परिवार में स्वतंत्रता एवं प्यार नही मिलता है तो उसमें अविश्वास पैदा हो जाता है। दोनो ही स्थिति में बालक संकट पैदा करती है। यदि बालक इस समस्या का सफलतापूर्वक समाधान कर लेता है तो उसमें एक मनोसामाजिक स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसे विश्वास कहा जाता है।
- **स्वायत्त बनाम लज्जा व शक (2-3 वर्ष) :** जिन बालकों पर उनके परिवार के सदस्यों को विश्वास हो जाता है तो वे उनके व्यवहार को मान्यता दे देते है। जिनसे उनमें स्वतन्त्रता एवं स्वायत्तता का गुण विकसित हो जाता है और जिन बालकों को परिवार में महत्व नही दिया जाता उनमें लज्जा का अनुभव करते है। लज्जा के कारण अपने कार्यों पर शक करने लगते है। इन दोनों का समाधान कर लेने पर उनमे इच्छा-शक्ति का गुण विकसित होता है।

- **पहल बनाम दोष (3-5 वर्ष) :** प्रारम्भिक बाल्यावस्था होती है। इसे प्री स्कूल की अवस्था भी कहते है। इस अवस्था में बालक बाह्य वातावरण में नयी-नयी उत्सुकता प्रदर्शित करता है। नयी-नयी खोज करता है। माता-पिता को ऐसे गुणों की सराहना करनी चाहिए। जो माता-पिता पहल की आलोचना करते है तो उनमे दोष उत्पन्न हो जाता है। इन दोनो का सफलतापूर्वक समाधान कर लेने से उनमे उद्देश्य नामक मनोसामाजिक गुण पैदा हो जाता है।
- **परिश्रम बनाम हीनता (5-12 वर्ष) :** यह उत्तर बाल्यावस्था है। इसमे बालक नवीन ज्ञान एवं सृजन एवं बौद्धिक कौशल को प्राप्त करने का प्रयास करता है। जिससे बालकों में परिश्रम का भाव विकसित होता है और असफल होने पर हीनता का शिकार हो जाते है। इसका समाधान कर लेने पर उनमें उद्देश्य का गुण विकसित हो जाता है।
- **पहचान बनाम संभ्रान्ति (12-18 वर्ष) :** यह किशोरावस्था का काल होता है। इस अवस्था कर्त्तव्य परायणता नामक गुण विकसित होता है।
- **घनिष्ठता बनाम अलगाव (18-40 वर्ष) :** इस अवस्था में "प्यार" नामक गुण विकसित होता है। इससे दूसरों के प्रति ईमानदारी एवं वफादारी करने का गुण विकसित होता है।
- **जननात्मक बनाम स्थिरता (40-65 वर्ष) :** यह वयस्कावस्था है। इसमें देखभाल नामक गुण विकसित होता है।
- **सम्पूर्णता बनाम निराशा (65+ उम्र) :** यह मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त की अन्तिम अवस्था है। इसमें परिपक्वता का गुण विकसित होता है। इस अवस्था में नैराश्य का भाव होता है।

मनोसामाजिक सिद्धान्त का शिक्षा में उपयोग

- प्राथमिक विद्यालय के बालकों में परिश्रम का गुण विकसित किया जाना चाहिए।
- इस सिद्धान्त के अनुसार छोटे बच्चों को पहल का बढ़ावा देना चाहिए।
- बालकों में पहचान विकसित करनी चाहिए।

ToppersNotes Unleash the topper in you

3
CHAPTER

वंशानुक्रम एव वातावरण का प्रभाव

वंशानुक्रम का सामान्य अर्थ है माता-पिता जैसे, संतान का होना। जीव अपने जैसे जीवों को जन्म देते हैं। बालक न केवल शारीरिक गुण, बल्कि मानसिक और सामाजिक गुण भी माता-पिता से प्राप्त करता है। हालांकि इसके अपवाद भी हैं, जैसे विद्वान माता-पिता के मन्द बुद्धि सन्तान होना। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि बालक अपने पूर्वजों से भी गुण प्राप्त करता है, जो माता-पिता के माध्यम से हस्तांतरित होते हैं। इसी प्रक्रिया को **वंशानुक्रम या आनुवंशिकता** कहते हैं।

- अंग्रेजी के HEREDITY का हिन्दी रूपान्तरण है जिसकी उत्पत्ति HERITAGE से मानी जाती है जिसका अर्थ है-विरासत
- अतः पूर्वजो से प्राप्त विशेषताओं का पीढ़ी दर पीढ़ी सन्तानों में स्थानान्तरण होना ही वंशक्रम है।
- पूर्वजो से प्राप्त व लक्षण जिसमें सन्तान उत्पत्ति का निर्धारण होता वंशक्रम कहलाता है।

वुडवर्थ: वंशानुक्रम में वे सभी बातें आ जाती हैं जो जीवन का आरम्भ करते समय व्यक्ति में उपस्थित थीं। ये जन्म के समय नहीं वरन् गर्भाधान के समय जन्म से लगभग नौ माह पूर्व व्यक्ति में पैदा होती हैं।

जे. ए. थाम्पसन: वंशानुक्रम पीढ़ियों के बीच उत्पत्ति संबंधी सम्बन्ध के लिए एक सुविधाजनक शब्द है।

एच. ए. पेटरसन: व्यक्ति अपने माता-पिता के माध्यम से पूर्वजों के गुण प्राप्त करता है, जिसे वंशानुक्रम कहते हैं।

पी. जिस्बर्ट: माता-पिता सन्तानों में जैविक या मनोवैज्ञानिक गुणों का हस्तांतरण वंशानुक्रम कहलाता है।

डगलस व हॉलैण्ड: माता-पिता या पूर्वजों से प्राप्त सभी शारीरिक, विशेषताएँ, क्रियाएँ या क्षमताएँ वंशानुक्रम में सम्मिलित होती हैं।

रूथ बेंडिक्ट: वंशानुक्रम माता-पिता से सन्तान को प्राप्त होने वाले गुणों का नाम है।

वंशानुक्रम के सिद्धांत

बीज कोष की निरन्तरता का सिद्धान्त (बीजमैन)

- बीजमैन के अनुसार जीव द्रव्य से सजीवो की उत्पत्ति होती है। वह जीव द्रव्य कभी भी समाप्त नही होती।
- यह जीव द्रव्य पीढ़ी दर पीढ़ी अण्डाणु व शुक्राणु के माध्यम से सन्तानों में स्थानान्तरित होता रहता है। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है जो कभी समाप्त नही होती।
- बीजमैन ने गर्भावस्था मे दो प्रकार के कोष बताये-
  - ✓ दैहिक कोष-शरीर का निर्माण
  - ✓ लैंगिक कोष-लिंग का निर्माण
- बीजमैन के जीव उत्पत्ति में एक कोष को मुख्य बताया दैहिक कोष
- बीजमैन के अनुसार जीव उत्पत्ति की प्रथम इकाई क्रोमोसोम को बतायी।

वातावरण से अर्जित गुणों के वितरण का सिद्धान्त (लेमार्क, उर्विक, हेरिसन, मेक्डुगल)

- वातावरण से अर्जित गुणो का वंशक्रम के माध्यम से सन्तानों में स्थानान्तरित किया जा सकता है।
- वातावरण के अन्तर्गत स्वयं की शारीरिक संरचना में किये जाने वाले परिवर्तनों का प्रभाव उत्पन्न होने वाली सन्तानों पर पड़ता है।

डार्विन	हेरिसन		मेक्डूगल	लेमार्क
मछली पर प्रयोग शक्तिशाली ही अपने वंशक्रम का निर्धारण करते हैं क्योंकि शक्तिशाली की प्रकृति स्वयं रक्षा करती हैं ।	तितलियों पर 100 सफेद		चूहे पर	जिराफ़ की गर्दन पर
	स्वच्छ वातावरण 50 सफेद रंग की संतने	गंदा वातावरण 50 मटेले रंग की संताने		

उत्पाद सूत्र की निरन्तरता का सिद्धान्त (फ्रांसिस गाल्टन)

- अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन करने हेतु गाल्टन ने श्रेणी विधि का प्रयोग किया जो सदैव घटते क्रम को प्रकट करती है।
- गाल्टन के अनुसार माता-पिता में उपस्थित उत्पाद सूत्र 50: 50 के रूप में सन्तानों में स्थानान्तरित होता रहता है। यह प्रक्रिया कभी समाप्त नही होती।
- प्रथम पीढी में 100 x 1/2 x 1/4 x 1/8 x 1/16 x 1/32 x 1/64 x 1/128

  50:25:12:6:3:1.5:0.35

प्रत्यागमन का सिद्धान्त/मौलिक गुणो का सिद्धान्त

- इस नियम के अनुसार बालक में माता-पिता के विपरीत गुण पाए जाते हैं।
- सोरेनसन के अनुसार प्रतिभाशाली माता-पिता के बच्चों में सामान्य गुण अधिक पाए जाते हैं।
- प्रकृति एक जाति के प्राणियों को समान स्तर पर रखने का प्रयास करती है।
- उदाहरण: महान् व्यक्तियों के पुत्र साधारणतः उनसे महान् नहीं होते।
- **कारण:**
  - ✓ माता-पिता के पित्रकों में से कोई अधिक या कम शक्तिशाली होता है।
  - ✓ पूर्वजों में किसी का पित्रक अधिक प्रभावी होता है।

अर्जित गुणों के संक्रमण का नियम

- इस नियम के अनुसार माता-पिता द्वारा अर्जित गुण सन्तान को नहीं मिलते।
- विकासवादी लेमार्क ने इसका विरोध किया और कहा कि जीवनकाल में अर्जित गुण पीढ़ीगत रूप से संचारित होते हैं।
- आधुनिक विज्ञान में यह सिद्धांत अस्वीकार किया जाता है क्योंकि इस प्रकार के संक्रमण के प्रमाण नहीं मिलते।

मैण्डल का नियम

- वर्णसंकर प्राणी अपने मूल या सामान्य रूप की ओर लौटते हैं।

- ग्रेगर जॉन मैण्डल ने मटरों और चूहों पर प्रयोग करके यह सिद्धांत प्रतिपादित किया।
- मैण्डल के अनुसार वर्णसंकर अपने पितृ कोषों का निर्माण करते हुए शुद्ध प्रकार के समान सन्तान देते हैं।
- बी. एन. झा के अनुसार, यह सिद्धांत प्रत्यागमन की व्याख्या करता है, जिसमें सुप्त गुण जाग्रत गुणों द्वारा निष्क्रिय हो जाते हैं।
- उदाहरण: काले माता-पिता के यहाँ गोरे बालक का जन्म।

प्रत्यागमन

- सन्तानों में माता-पिता से विपरीत लक्षणों का प्रकट होना ही प्रत्यागमन कहलाता है।
  जैसे-लम्बे के बौने एवं बौने की लम्बी सन्तानों का उत्पन्न होना।

मेण्डल ने दो सूत्र बतायें-

- जागृत सूत्र
- सुप्त सूत्र
  - ✓ **जागृत सूत्र**
    - माता-पिता से संबंध, माता-पिता की निषेचन कि क्रिया के दौरान अगर जागृत सूत्र सक्रिय हुए तो सन्ताने माता-पिता के समान पैदा होगी।
      जैसे-लम्बे के लम्बे, काले के काली सन्तानों का होना।
  - ✓ **सुप्त सूत्र**
    - पूर्वजों से सम्बन्ध, माता-पिता की निषेचन की क्रिया के दौरान अगर सुप्त सूत्र सक्रिय हुए तो सन्ताने पूर्वजो के समान या माता-पिता के विपरीत लक्षणों की उत्पन्न होगी।
      जैसे-लम्बे के बौने, काले के गौरी सन्तानों का उत्पन्न होना
    - मेण्डल के अनुसार प्रथम पीढ़ी के लक्षण द्वितीय पीढ़ी में प्रकट न होकर तृतीय पीढ़ी में प्रकट होते है। जिसका आनुवांशिक अनुपात 3:1 व प्रत्येक तीसरी पीढ़ी में यह अनुपात 9:3:3:1 हो जाता है।

बालक के विकास में वंशानुक्रम का प्रभाव

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक के व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू पर वंशानुक्रम का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। मुख्य मनोवैज्ञानिकों के विचार निम्नलिखित हैं:

- **मूल शक्तियों पर प्रभाव :**
  - ✓ **थॉर्नडाइक** के अनुसार बालक की मूल शक्तियों का मुख्य कारण वंशानुक्रम है।
- **शारीरिक लक्षणों पर प्रभाव :**
  - ✓ **कार्ल पीयरसन** के विचार से माता-पिता की लम्बाई बालक की लम्बाई पर प्रभाव डालती है।
- **प्रजाति की श्रेष्ठता पर प्रभाव :**
  - ✓ **क्लिनबर्ग** का मानना है कि बुद्धि की श्रेष्ठता प्रजाति पर निर्भर करती है, जैसे अमेरिका की श्वेत प्रजाति नीग्रो प्रजाति से श्रेष्ठ मानी जाती है।
- **व्यावसायिक योग्यता पर प्रभाव :**
  - ✓ **कैटल** ने अमेरिका के 885 वैज्ञानिक परिवारों के अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि व्यावसायिक योग्यता का मुख्य कारण वंशानुक्रम है।
    उदाहरण: 2/5 परिवार व्यवसायी वर्ग के, 1/2 उत्पादक वर्ग के और 1/4 कृषि वर्ग के थे।
- **सामाजिक स्थिति पर प्रभाव**
  - ✓ **विनशिप** के अनुसार गुणवान एवं प्रतिष्ठित माता-पिता की संतान भी प्रतिष्ठित होती है।
  - ✓ रिचर्ड एडवर्ड के परिवार के उदाहरण से पता चलता है कि उनके वंशजों ने उच्च पद प्राप्त किए, जैसे अमेरिका का उपराष्ट्रपति।

- **चरित्र पर प्रभाव**
  - ✓ **डगडेल** ने 1877 में ज्यूकस वंशजों के अध्ययन से सिद्ध किया कि चरित्रहीन माता-पिता की संतान भी चरित्रहीन होती है।
  - ✓ अध्ययन में पाँच पीढ़ियों के लगभग 1000 लोगों में से 300 बाल्यावस्था में मरे, 310 ने गरीबगृहों में समय बिताया, 440 रोगों से मरे और 130 अपराधी थे।
- **महानता पर प्रभाव**
  - ✓ **गाल्टन** के अनुसार व्यक्ति की महानता उसके वंशानुक्रम का परिणाम है।
  - ✓ उनके अध्ययन में महान न्यायाधीशों, सैनिकों, साहित्यकारों आदि के परिवारों में इसी क्षेत्र के अन्य प्रशंसित सदस्य भी पाए गए।
- **वृद्धि पर प्रभाव**
  - ✓ **गोडार्ड** ने कालीकॉक नामक सैनिक के वंशजों के अध्ययन से सिद्ध किया कि मन्द बुद्धि माता-पिता की संतान मन्द बुद्धि होती है और तीव्र बुद्धि माता-पिता की संतान तीव्र बुद्धि।
- **समन्वित प्रभाव**
  - ✓ **कोलेसनिक** के अनुसार व्यक्ति की शारीरिक रचना, मस्तिष्क एवं स्नायु संस्थान, खेल-कूद और गणितीय योग्यता वंशानुक्रम पर निर्भर होती है, पर वातावरण का प्रभाव कहीं अधिक होता है।
  - ✓ मनोवैज्ञानिक प्रयोग सिद्ध करते हैं कि शारीरिक एवं मानसिक विकास में वंशानुक्रम का प्रमुख योगदान होता है।
  - ✓ चरित्रहीन माता-पिता की संतान चरित्रहीन होती है, जबकि स्वस्थ बौद्धिक एवं मानसिक स्थिति वंशानुक्रम की देन होती है।

वातावरण

- वातावरण को पोषक या पर्यावरण भी कहते हैं। पर्यावरण शब्द "परि" (चारों ओर) और "आवरण" (ढकने वाला) से बना है, अर्थात् वह जो चारों ओर से व्यक्ति को घेरे।
- व्यक्ति का बाहर की उन परिस्थितियों, तत्वों एवं घटनाओं का सामूहिक रूप से वातावरण है जो व्यक्ति की वृद्धि एवं उसके विकास को प्रभावित करते है।
- बालक के व्यक्तित्व के विकास में वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है।
- वंशानुक्रम से बालक को अनेक शक्तियाँ मिलती हैं, पर उनका विकास वातावरण पर निर्भर करता है।
- वातावरण में वे सभी तत्व सम्मिलित होते हैं जो व्यक्ति के जीवन और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

जिस्बर्ट: वातावरण वह वस्तु है जो किसी अन्य वस्तु को घेरती है और उस पर प्रभाव डालती है।

एनी एनास्टासी: वातावरण वे सभी वस्तुएँ हैं जो व्यक्ति के पितृक के अतिरिक्त उसके सभी पक्षों को प्रभावित करती हैं।

मैकाइवर एवं पेज: जीव, उसके जीवन का ढाँचा, बीता जीवन एवं अतीत पर्यावरण का फल है।

बोरिंग, लैंगफील्ड एवं वेल्ड: जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति द्वारा ग्रहण की गई सभी उत्तेजनाएँ वातावरण में सम्मिलित हैं।

जे. एस. रॉस: वातावरण एक बाह्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।

वुडवर्थ: वातावरण वे तत्व हैं जिन्होंने व्यक्ति को जीवन प्रारम्भ करने के समय प्रभावित किया।

डगलस व हॉलैण्ड: वातावरण सभी बाह्य शक्तियाँ, प्रभाव और दशाएँ हैं जो जीवित प्राणियों के जीवन, स्वभाव, व्यवहार, विकास एवं परिपक्वता को प्रभावित करती हैं।

बालक पर वातावरण का प्रभाव

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि बालक के व्यक्तित्व पर भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण का व्यापक प्रभाव होता है। कुछ मुख्य अध्ययन निम्नलिखित हैं:

- **शारीरिक अन्तर पर प्रभाव:**
  - ✓ **फ्रेंज बोन्स:** भौगोलिक वातावरण से शारीरिक लम्बाई प्रभावित होती है; जैसे जापानी और यहूदी अमेरिकियों की लम्बाई बढ़ी।
- **मानसिक विकास पर प्रभाव:**
  - ✓ **गोर्डन:** खराब सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण में मानसिक विकास धीमा होता है; उदाहरण नदियों के किनारे रहने वाले बच्चे।
- **बुद्धि पर प्रभाव:**
  - ✓ **केंडोल:** बुद्धि वंशानुक्रम से कम, वातावरण से अधिक प्रभावित होती है; धनी वर्ग के बच्चे अधिक बुद्धिमान होते हैं।
  - ✓ **स्टीफेंस:** अच्छे वातावरण में पाले बच्चों की बुद्धि अधिक विकसित होती है।
- **व्यक्तित्व पर प्रभाव:**
  - ✓ **कूले:** उत्तम वातावरण में पले बच्चे बहुमुखी व्यक्तित्व विकसित करते हैं; निर्धन परिवार के दो साहित्यकारों का उदाहरण।
- **प्रजाति की श्रेष्ठता पर प्रभाव:**
  - ✓ **क्लार्क:** बुद्धि की श्रेष्ठता वंशानुक्रम से नहीं, वातावरण से होती है; अमरीका में श्वेतों की तुलना में नीग्रो जाति के लिए उचित वातावरण की कमी।
- **अनाथ बच्चों पर प्रभाव:**
  - ✓ **वुडवर्थ:** अनाथ बच्चों को अच्छे वातावरण में पाला जाए तो वे भी अच्छे बनते हैं।
- **जुड़वाँ बच्चों पर प्रभाव:**
  - ✓ **न्यूमैन, फ्रीमैन, होलजिंगर:** अलग-अलग वातावरण में रखे गए जुड़वाँ बच्चों में व्यक्तित्व, बुद्धि, व्यवहार में अंतर पाया गया।
- **बालक पर बहुमुखी प्रभाव:**
  - ✓ **एवेरॉन का जंगली बालक:** जंगली पशुओं के बीच पला बालक मानव-सदृश व्यवहार नहीं कर पाया।
  - ✓ **स्टीफेंस:** उत्तम वातावरण में रहने से बालक की प्रतिभा बढ़ती है, खराब वातावरण में गिरावट आती है।

वंशानुक्रम एवं वातावरण मे संबंध

वंशानुक्रम तथा वातावरण, एक-दूसरे से पृथक् नहीं हैं। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। बीज तथा खेत जैसा इनका सम्बन्ध है। एक के बिना दूसरे की सार्थकता नहीं है। स्वस्थ बीज तभी स्वस्थ पौधे का रूप धारण कर सकता है जबकि वातावरण स्वस्थ एवं संतुलित हो। अच्छी खाद, समय पर पानी, धरती की तैयारी, निराई-गुड़ाई आदि वातावरण की सृष्टि करती है। लैण्डिस ने इसलिये कहा है-

वंशानुक्रम हमें विकसित होने की क्षमताएँ प्रदान करता है। इन क्षमताओं के विकसित होने के अवसर हमें वातावरण से मिलते हैं, वंशानुक्रम हमें कार्यशील पूँजी देता है और परिस्थिति हमें इसको निवेश करने के अवसर प्रदान करती है।

मैकआइवर एवं पेज ने वंशानुक्रम एवं वातावरण, दोनों के महत्त्व को स्वीकार किया है। इन्होंने लिखा है- “जीवन की प्रत्येक घटना दोनों का परिणाम होती है। किसी भी निश्चित परिणाम के लिये एक उतनी ही आवश्यक है जितनी कि दूसरी। कोई भी न तो हटाई जा सकती है और न ही कभी पृथक् की जा सकती है।”

वुडवर्थ तथा मारेक्विस ने कहा है- "व्यक्ति, वंशानुक्रम तथा वातावरण का योग नहीं, गुणनफल है।"

विकास की किसी अवस्था में बालक या व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विशेषताओं की व्याख्या करने के लिए साधारणतः वंशानुक्रम और वातावरण शब्दों का प्रयोग किया जाता है। बालक के निर्माण में वंशानुक्रम और वातावरण का किस सीमा तक प्रभाव पड़ता है-यह विषय सदैव विवादास्पद था और अब भी है। प्राचीन समय में यह विश्वास किया जाता था कि वंशानुक्रम और वातावरण एक-दूसरे से पृथक् थे और बालक या व्यक्ति के व्यक्तित्व और कार्यक्षमता को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करते थे। आधुनिक समय में इस धारणा में पर्याप्त परिवर्तन हो गया हैं। अब हमारे इस विश्वास में निरन्तर वृद्धि होती चली जा रही है कि व्यक्ति बालक, किशोर या प्रौढ़ के रूप में जो कुछ सोचता, करता या अनुभव करता है, वह वंशानुक्रम के कारकों और वातावरण के प्रभावों के पारस्परिक सम्बन्धों का परिणाम होता है।

हमारे विश्वास में निरन्तर वृद्धि के कारण हैं-वंशानुक्रम और वातावरण सम्बन्धी परीक्षण। इन परीक्षणों ने सिद्ध कर दिया है कि समान वंशानुक्रम और समान वातावरण होने पर भी बच्चों में विभिन्नता होती है। अतः बालक के विकास पर न केवल वंशानुक्रम का वरन् वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। इसकी पुष्टि करते हुए **क्रो व क्रो** ने लिखा है- "व्यक्ति का निर्माण न केवल वंशानुक्रम और न केवल वातावरण से होता है। वास्तव में वह जैविकदाय और सामाजिक विरासत के एकीकरण की उपज है।"

4 CHAPTER समाजीकरण प्रक्रियाएँ

समाजीकरण

समाजीकरण एक जटिल और व्यापक अवधारणा है, जिसे समाजशास्त्र में विशेष महत्व दिया गया है। य**ह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव को समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक संसार से परिचित कराया जाता है।** इसके माध्यम से व्यक्ति समाज के मूल्यों, आदर्शों और परंपराओं को सीखता है और इनका आंतरिककरण करता है। समाजीकरण सिर्फ एक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह संस्कृति का हस्तांतरण भी है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक होता है।

समाजीकरण अर्थात	
समाजिक अनुकूलन की प्रक्रिया	**संस्कृति की सीख**
समाजीकरण को बच्चों द्वारा की जाने वाली सामाजिक अनुकूलन प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है, जिसमें वे समाज के विभिन्न मानकों, मूल्यों, और आदर्शों को अपनाते हैं। यह प्रक्रिया बच्चे को एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज का हिस्सा बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।	समाजीकरण का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह संस्कृति के हस्तांतरण का माध्यम है। समाजीकरण के जरिए व्यक्ति समाज के नियमों और रीति-रिवाजों को सीखता है, जिससे वह अपने समाज में एक प्रामाणिक सदस्य बनता है।

रोजेनबर्ग एवं ट्यूनर के अनुसार, "समाजीकरण का अभिप्राय समाज के अन्य व्यक्तियों की प्रत्याशाओं, समाज के मूल्यों, और मानदण्डों के प्रति व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले अनुकूलन और अनुरूपता से है।"

बैकमैन के अनुसार, "समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अन्य लोगों के साथ की जाने वाली अन्तर्क्रियाओं के परिणामस्वरूप बदलता है।"

किम्बाल यंग के अनुसार, "समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति समाज में प्रवेश करता है और उसे समाज के मूल्यों, आदर्शों, और नियमों को स्वीकार करने की प्रेरणा मिलती है।"

समाजीकरण की विशेषताएँ

- उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर समाजीकरण में निम्नांकित विशेषताएँ पायी जाती हैं-
- समाजीकरण सीखने की एक प्रक्रिया है।
- समाजीकरण जन्म से मृत्यु तक चलने वाली एक सतत् प्रक्रिया है।
- समाजीकरण द्वारा सामाजिक परिवेश से अनुकूलन तथा व्यक्तित्व को विकसित करने की क्षमता प्रदान की जाती है।
- समाजीकरण संस्कृति को आत्मसात् करने की प्रक्रिया है।
- समाजीकरण समाज की प्रकार्यात्मक सदस्य बनने की प्रक्रिया है।

समाजीकरण के कारक

- **पालन-पोषण**:माता-पिता और परिवार के सदस्य बच्चों के भावनात्मक और मानसिक विकास में मदद करते हैं, जिससे उनका सामाजिक दृष्टिकोण और व्यवहार उभरता है।
- **सहानुभूति**: बच्चों में अपनत्व, प्रेम, और भेदभाव की भावना का विकास होता है, जो सामाजिक रिश्तों को बेहतर बनाता है।
- **सहकारिता**: बच्चों को सहयोग और साथ काम करने की भावना दी जाती है, जिससे वे समाज के अच्छे सदस्य बनते हैं।
- **निर्देश**: समाजीकरण में दिशा देने वाले सामाजिक निर्देश महत्वपूर्ण होते हैं, जो बच्चों को समाज के मूल्य और आदर्शों के प्रति जागरूक करते हैं।
- **आत्मीकरण**: बच्चों को माता-पिता, परिवार और पड़ोसियों से आत्मीयता का अनुभव होता है, जिससे उनका सामाजिक समायोजन बेहतर होता है।
- **अनुकरण**:समाजीकरण का एक प्रमुख तत्व है अनुकरण। बच्चे समाज में हो रही गतिविधियों को देखकर और समझकर उनके अनुकूल आचरण को अपनाते हैं।
- **पुरस्कार व दण्ड**:सही आचरण पर प्रशंसा (पुरस्कार) और गलत आचरण पर दण्ड समाजीकरण के प्रक्रियाओं का हिस्सा है। यह बच्चों को समाज के मानकों के अनुरूप कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

समाजीकरण के तत्व / स्थल

- **परिवार**: यह समाजीकरण का सबसे पहला और महत्वपूर्ण स्थल है। परिवार में बच्चों को सामाजिक मूल्यों, आदर्शों, और रीतियों का पहला पाठ पढ़ाया जाता है।
- **पड़ोस / रिश्तेदार**: परिवार के अलावा पड़ोस और रिश्तेदारों से भी बच्चे समाजिकता और रिश्तों के बारे में सीखते हैं।
- **विद्यालय**: स्कूल बच्चों के सामाजिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है, जहाँ वे अन्य बच्चों से संपर्क करते हैं और सामाजिक व्यवहार की आदतें सीखते हैं।
- **समुदाय / धर्म, जाति**:समाजीकरण के प्रक्रिया में धर्म, जाति, और समुदाय भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ से बच्चे संस्कृति, परंपराएँ और धार्मिक मान्यताएँ सीखते हैं।
- **आयु-समूह / खेलकूद**: बच्चों को उनके समान आयु-समूह के साथ खेलते हुए सामाजिक कौशल सीखने का अवसर मिलता है।
- **राजनैतिक संस्थाएँ**: राजनैतिक संस्थाएँ भी बच्चों के विचारों और सामाजिक आदर्शों के निर्माण में सहायक होती हैं।
- **सामाजिक शिक्षण**: बच्चों को सामाजिक मान्यताओं और व्यवहारों का पहला पाठ घर से शुरू होता है, जहाँ वे खानपान, रहन-सहन, और अन्य सामाजिक व्यवहारों को सीखते हैं।

समाजीकरण की अवस्थाएँ

समाजीकरण जीवनभर चलने वाली एक निरंतर प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के साथ विकसित होती है। हर उम्र में व्यक्ति समाज से जुड़ने, सीखने और अनुकूलित होने की प्रक्रिया में विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता है। उम्र के साथ समाजीकरण की प्रकृति में बदलाव आता है और यह प्रत्येक व्यक्ति की संवेगात्मक और सामाजिक परिपक्वता के लिए आवश्यक होता है।

इस सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने समाजीकरण की प्रक्रिया के सात स्तरों की चर्चा की है। जॉनसन ने इसके चार स्तरों की चर्चा की है-

अवस्था	उम्र	विशेषताएँ
मौखिक स्तर (The Oral Stage)	जन्म से 1.5 वर्ष तक	➢ बच्चे अपनी संवेदनाओं को रोने, चिल्लाने, हँसने और मुस्कराने के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। ➢ इस अवस्था में भाषा का अभाव होता है।
शैशवावस्था (The Anal Stage)	1 से 3 वर्ष तक	➢ शौच प्रशिक्षण के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने की कोशिश। ➢ बोलना, चलना, सफाई आदि आदतों की जानकारी दी जाती है।
मातृरति स्तर या तादात्मीकरण की अवस्था (The Oedipal Stage)	4 से 12-13 वर्ष तक	➢ बच्चा अपने परिवार के सदस्यों की भूमिका समझने लगता है। ➢ परिवार के आदर्शों के अनुरूप व्यवहार करना शुरू करता है।
किशोरावस्था (Adolescence)	14-15 वर्ष से 20-21 वर्ष तक	➢ स्वतंत्रता की चाहत प्रबल होती है। ➢ शारीरिक परिवर्तन होते हैं, जो मानसिक स्थिति को प्रभावित करते हैं। ➢ माता-पिता की बंदिशों से मुक्ति की इच्छा।

समाजीकरण की प्रक्रिया मे शिक्षक या अध्यापक की भूमिका

अध्यापक बच्चे के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्कूल शिक्षा के माध्यम से बच्चे की समाजीकरण प्रक्रिया को तेज और क्रमबद्ध रूप से विकसित किया जाता है। स्कूल, बच्चे के समाजीकरण को एक औपचारिक रूप से प्रदान करता है और यह प्रक्रिया परिवार से आगे बढ़ती है, जहाँ से परिवार बच्चे को छोड़ता है।

शिक्षक के स्नेह, पक्षपात, बुरे व्यवहार, दण्ड आदि का सभी बच्चों पर कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है और उसका सामाजिक विकास उत्तम या विकृत हो जाता है। **हार्ट (F. W. Hart)** ने इस सम्बन्ध में परीक्षण किये हैं। यदि शिक्षक, मित्रता और सहयोग में विश्वास करता है तो बच्चों में भी इन गुणों का विकास होता है। यदि शिक्षक तनिक तनिक सी बातों पर बच्चों को दण्ड देता है, तो उनके समाजीकरण में संकीर्णता आ जाती है। यदि शिक्षक अपने छात्रों के प्रति सहानुभूति रखता है, तो छात्रों का समाजीकरण सामान्य रूप से होता है।

अध्यापक निम्नलिखित कदम उठा सकता है ताकि बच्चे का समाजीकरण सुदृढ़ हो सके:

- **अभिभावकों से सम्पर्क:** अध्यापक को समय-समय पर अभिभावकों से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए ताकि वे मिलकर बच्चे के विकास पर ध्यान दे सकें।
- **सामाजिक संस्कृति और मान्यताओं का ज्ञान:** बच्चे को समाज की संस्कृति और समाज में प्रचलित मान्यताओं के बारे में जानकारी देना चाहिए
- **सामाजिक आदर्शों का उदाहरण प्रस्तुत करना:**बच्चे के सामने समाजिक आदर्शों का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए ताकि वह उनसे प्रेरित हो सके।
- **स्कूल की परम्पराओं से परिचित कराना:** बच्चों को स्कूल की परम्पराओं और उसकी शिक्षा प्रणाली से परिचित कराना चाहिए ताकि वे स्कूल के वातावरण से जुड़ सकें।
- **सामूहिक क्रियाओं और योजनाओं में भागीदारी:** बच्चों को विभिन्न सामाजिक योजनाओं और सामूहिक क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उनका सामाजिक विकास हो सके।

- **अन्तः सांस्कृतिक भावना का विकास:** स्कूल में विभिन्न परिवारों से बच्चे आते हैं, जिनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भिन्न होती है। इसलिए, अध्यापक को बच्चों में अन्तः सांस्कृतिक भावना का विकास करना चाहिए।
- **मानवीय सम्बन्ध स्थापित करना:** अध्यापक को अपने सहयोगियों, छात्रों और प्रधानाचार्य के साथ अच्छे मानवीय सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए ताकि स्कूल का माहौल स्वस्थ रहे।
- **स्नेह और सहानुभूति का व्यवहार:** बच्चों के साथ स्नेह और सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए ताकि वे स्कूल में सुरक्षित महसूस करें और अपने विकास में सहजता महसूस करें।

समाजीकरण की प्रक्रिया मे अभिवाहक (माता / पिता) की भूमिका

यह कहा जाता है कि **माँ के त्याग** और **पिता की सुरक्षा** में रहते हुए बच्चा जो कुछ सीखता है, वह उसके जीवन की स्थायी पूँजी बन जाती है। परिवार वह आधार है जहाँ से बच्चा सामाजिक जीवन की शुरुआत करता है।

- **वर्ग भिन्नता (Class Differences)**
  बच्चों के समाजीकरण पर उनके परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का गहरा प्रभाव पड़ता है। **मेलविन कॉन** (M. Kohn, 1960) के अनुसार, निम्न और मध्यम वर्ग दोनों ही आर्थिक स्थिति वाले माता-पिता ने अपने बच्चों को ईमानदार, आज्ञाकारी और विश्वसनीय होने की शिक्षा दी, परंतु इन दोनों में अन्तर था।
  - ✓ **निम्न वर्ग के माता-पिता** चाहते थे कि उनके बच्चे अपने से बड़ों के प्रति आज्ञाकारी हों।
  - ✓ **मध्यम वर्ग के माता-पिता** चाहते थे कि उनके बच्चे अपने विवेक और नैतिकता के आधार पर आज्ञाकारी बनें।
  - ✓ इसके अलावा, **मध्यम वर्ग के परिवार** अपने बच्चों में आकांक्षाओं का स्तर ऊँचा बनाने का प्रयास करते हैं, जिससे बच्चों का मानसिक और बौद्धिक विकास अधिक होता है।
- **पारिवारिक अन्तर्क्रिया (Family Interactions)**
  बच्चे के समाजीकरण पर पारिवारिक अन्तर्क्रिया का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि बच्चे को उसके परिवार में **स्नेहात्मक** वातावरण नहीं मिलता, या उसे **कठोर अनुशासन** में रखा जाता है, तो इसका प्रतिकूल प्रभाव बच्चे के व्यक्तित्व पर पड़ सकता है।
  - ✓ यदि माता-पिता का व्यवहार बच्चों के प्रति **सकारात्मक** और **मित्रवत** है, तो इससे बच्चे में आत्मविश्वास पैदा होता है और वह अनुकूल **स्व-अवधारणा** (Self-Concept) का विकास करता है।
  - ✓ इसके विपरीत, यदि परिवार में बच्चों के प्रति **दुश्वारियों** का सामना करना पड़ता है, तो यह उनके मानसिक और सामाजिक विकास में रुकावट उत्पन्न करता है।
- **पारिवारिक संरचना (Family Composition)**
  पारिवारिक संरचना का बच्चों के समाजीकरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
  - ✓ **छोटे परिवार** के बच्चों में सामाजिक परिपक्वता जल्दी आती है, जबकि **बड़े परिवार** के बच्चों में यह विलंब से विकसित होती है।
  - ✓ छोटे परिवारों में बच्चों को अपने माता-पिता और वरिष्ठ सदस्यों से अधिक **अन्तर्क्रिया** का अवसर मिलता है, जिससे उनका **संज्ञानात्मक विकास** और **उपलब्धि अभिप्रेरणा** (Achievement Motivation) अधिक होती है।
  - ✓ इसके विपरीत, **परिवार का विघटन** बच्चों में अवांछित गुणों को जन्म देता है, जो उनके समाजीकरण में रुकावट डालते हैं।

Toppers Notes unleash the topper in you

- **जन्म क्रम (Birth Order)**

  परिवार में बच्चे के **जन्म क्रम** का भी समाजीकरण पर असर पड़ता है।

  ✓ **पहली संतान** में मानसिक विकास जल्दी होता है, लेकिन शारीरिक और अन्य विकास अपेक्षाकृत देर से होता है।

  ✓ इसके विपरीत, **बाद में जन्मे बच्चे** अधिक आसानी से **अनुकरण** करते हैं, जिससे उनके सामाजिक और मानसिक विकास में मदद मिलती है।

समाजीकरण की प्रक्रिया मे साथी या मित्र की भूमिका

बालकों के समाजीकरण में **साथी** या **मित्रों** की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये मित्र बच्चे के **व्यक्तित्व** और **सामाजिक व्यवहार** के विकास में अहम योगदान देते हैं। बच्चे आपसी **सम्पर्क** और बातचीत के द्वारा विभिन्न प्रकार के **व्यवहार** सीखते हैं, जो उनके समाजीकरण में अहम् भूमिका निभाते हैं।

- **मित्रों का चयन :** समाजीकरण की प्रक्रिया में बालक मित्रों का चयन **स्वतंत्र रूप** से करता है। यह उसकी **स्वतंत्र इच्छाओं** और **आवश्यकताओं** के आधार पर होता है। यह वह समय होता है जब बच्चा **पहली बार** अन्य बालकों को अपने मित्र के रूप में **चुनता है**। इस चयन की प्रक्रिया में बालक न सिर्फ़ अपने दोस्त के साथ **सम्बंध** स्थापित करता है, बल्कि उसे समाजीकरण के एक नए चरण का अनुभव भी होता है।
- **मित्रों का प्रभाव :** जिन बालकों को मित्र के रूप में चुना जाता है, उनके **आचरण** और **विचार** बच्चे के **समाजीकरण की दिशा** और **स्वरूप** को निर्धारित करते हैं। बालक अपने मित्रों से **सामाजिक व्यवहार, नैतिकता**, **संवेदनशीलता**, और **सामाजिक अनुशासन** सीखता है।
- मित्रों के प्रभाव से बालकों में **समझदारी, सहयोग, सामूहिकता**, और **समस्या-समाधान** जैसे गुण विकसित होते हैं। वे **नैतिक दायित्व** और **सामाजिक नियमों** के पालन में मित्रों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं।
- **सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव :** मित्रों का प्रभाव **सकारात्मक** और **नकारात्मक** दोनों हो सकता है। अगर बालक अच्छे और **सकारात्मक मित्रों** के संपर्क में होता है, तो यह उसके सामाजिक विकास को **प्रोत्साहित** करता है। इसके विपरीत, **नकारात्मक** प्रभाव भी पड़ सकता है, जैसे कि खराब आदतें और गलत विचारों का संक्रमण, जो बालक के समाजीकरण को नुकसान पहुँचा सकते हैं।
- **मित्रों का समाजीकरण में योगदान :** बालक के मित्र उसे **स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने** और **स्वतंत्र सोचने** की क्षमता प्रदान करते हैं। मित्रों के बीच का **संपर्क** और **समूह की भावना** उसे **समाजिक समायोजन** और **संघर्ष समाधान** में मदद करती है। वे उसे दूसरों से **समझौता** करने और **सहिष्णुता** जैसे गुणों से परिचित कराते हैं।